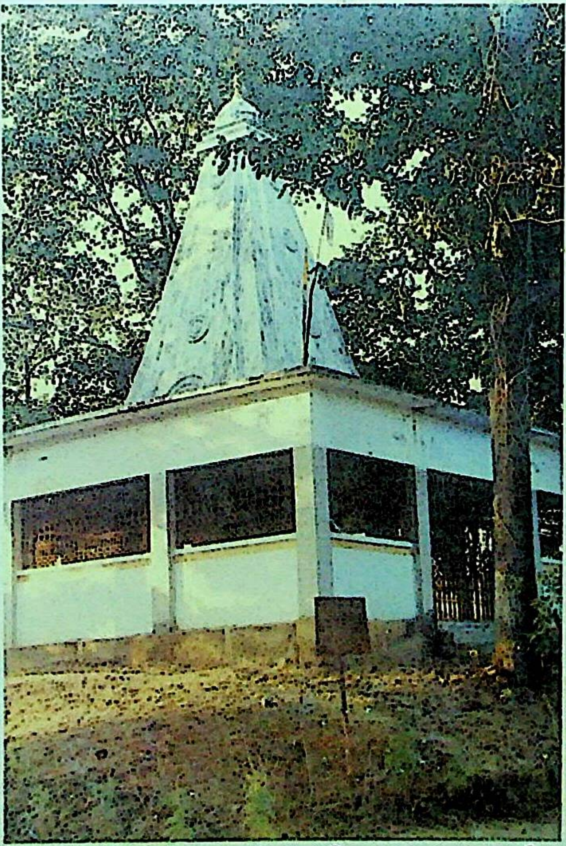
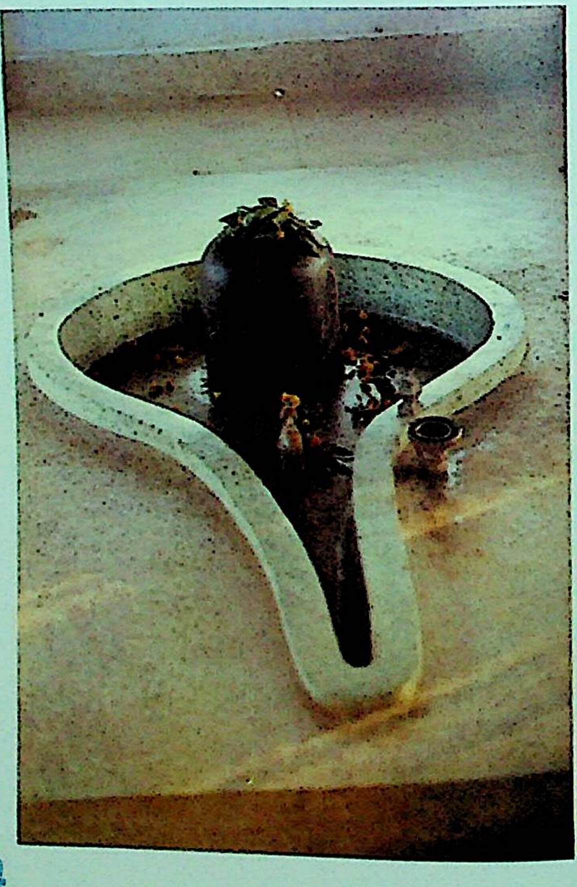
विश्व कल्याण



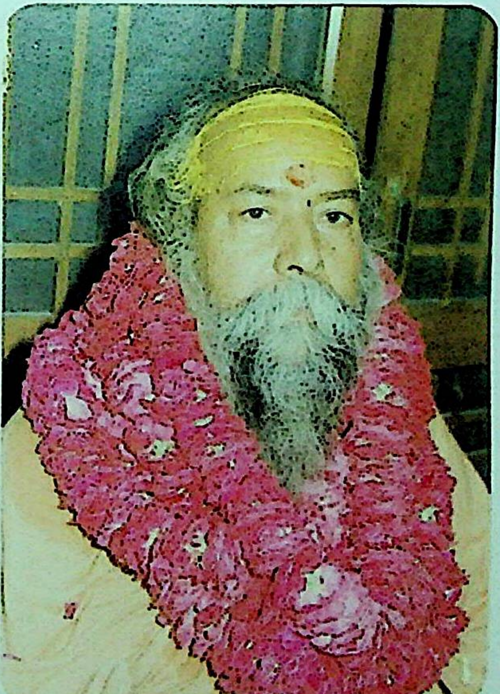
जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरुपानन्द जी सरस्वती महाराज की कर्म स्थली

प्रकाशक : आध्यात्मिक उत्थान मण्डल

श्री विश्वरूपेश्वर महादेव जिनके नाम से
विश्व कल्याण आश्रम बना

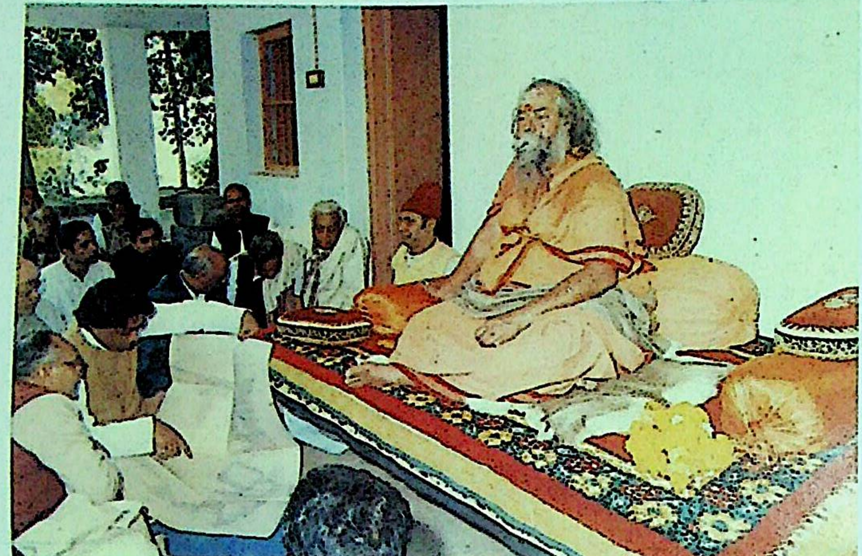


[illegible] आश्रम के अधिष्ठाता
परमपूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य
स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती महाराज



जिन्होंने अपना जीवन वनवासियों की सेवा
में अर्पित कर दिया ।

चिकित्सालय के नक्शे के सम्बन्ध में भक्तों से विचार विमर्श करते हुए महाराजश्री



हमारे गुरुदेव

भारत ऋषियों का देश रहा है। यहाँ के साधु-संत, देश-समाज और संस्कृति की रक्षा के लिए अग्रणी रहे हैं। यहाँ के संत महात्माओं की परम्परा अक्षुण्य चली आ रही है। उन्हीं सन्तों में कई ऐसे सन्त हुए हैं जिन्होंने धर्म, समाज और देश के लिए बाल्यावस्था से अपना जीवन अर्पित कर दिया है।

उसी सन्त परम्परा में अद्वैत सिद्धान्त के महान प्रवर्तक भगवत्पाद आद्य शङ्कराचार्य हुए हैं, जिन्होंने सनातन धर्म की रक्षा के लिए देश की चार दिशाओं में चार मठों की स्थापना की। यह परम्परा अबाध गति से चली आ रही है। उसी में बड़े-बड़े ब्रह्मज्ञानी भक्त और तपस्वी हो गये हैं। जिन्होंने ब्रह्म का साक्षात्कार किया और भक्ति द्वारा भगवान् को प्राप्त किया है।

आज से ७३ वर्ष पूर्व एक अद्वितीय ज्ञानी, भक्त, योगी का अवतार हमारे देश में हुआ था। उन्होंने ११ साल की अल्पायु में गृह-त्याग किया। वाराणसी में पूज्य स्वामी महेश्वरानन्द सरस्वती से वेद-वेदान्त का अध्ययन किया।

सन् १९४२ के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेकर नौ महीने जेल की यातना सही। वाराणसी के जेल में नौ महीने व्यतीत करने के पश्चात् मध्य प्रदेश की ओर गये। वहाँ भी देश की स्वतन्त्रता की रट लगाने के कारण नरसिंहपुर के जेल में तीन महीने का कारावास भोगना पड़ा।

सन् १९५० ई० में ज्योतिर्मठ बदरिकाश्रम के जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती महाराज से दण्ड सन्यास की दीक्षा ली और पूज्य गुरुदेव ने उनका नाम स्वरूपानन्द सरस्वती रखा।

पूज्य स्वामीजी के मन में देश और देशवासियों के प्रति अगाध स्नेह है। मध्य प्रदेश के परहंसी गंङ्गा क्षेत्र श्रीवनम् में तपस्या करते हुए वनवासियों के जीवन को निकट से देखा। उनके कष्टों को, भोलेपन को तथा उनकी निर्धनता से उत्पन्न परेशानियों को देखने का अवसर मिला।

श्री विश्व कल्याण आश्रम

पूज्यपाद महाराज श्री ने भारत के विभिन्न दुर्गम वनों और पहाड़ों में रहने वाले वनवासियों के ग्रामों में भ्रमण कर यह निश्चय किया कि समाज की उपेक्षा और वनवासी बन्धुओं के अज्ञान का लाभ उठाकर क्रिश्चयन मिशनरीज ने लाखों संख्या में इन भोले भाइयों को क्रिस्तान बना डाला है। यद्यपि ये अपने हिन्दू धर्म में पुन: आने के लिए तैयार है किन्तु इन्हें इस कार्य में सहमत देने वालों की संख्या नगण्य है। अत: इस कार्य को अग्रसर करने के लिए बिहार के सिंहभूम और राँची जिले के कई ग्रामों में सेवा शिविर लगाकर वनवासी बन्धुओं के स्वधर्मानयन की इच्छा की पूर्ति एवं कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिये एक निश्चित स्थान की आवश्यकता प्रतीत हुई और भगवद् प्रेरणा से सिंहभूम जिले में पारलीपोस नाम गाँव उपयुक्त समझा गया। गंगा सदृश कोकिला नदी (कोयल) और जमुना सदृश काली नदी के संगम पर प्राचीन प्रयाग जैसा एक स्थान लिया गया और वहीं जंगल में सूने स्थान पर विराजमान शिवलिंग, के भीतर समस्त (विश्व) देवी-देवताओं के दर्शन के चमत्कार देखकर शिवलिंग का नवीन नाम विश्वरूप महादेव एवं आश्रम का. नाम विश्वकल्याण आश्रम रखा गया और निश्चय किया गया कि यहाँ प्रति वर्ष शिवरात्रि पर वनवासी सेवा शिविर का आयोजन किया जावे। वहाँ कोई इमारत तो थी नहीं, अत: ३-४ वर्षों तक घास फूस के झोपड़े बाँधकर शिविर का कार्य होने लगा। ९ दिन के शिविर में अनेक प्रकार के यज्ञ और नवाह पाठ के साथ-साथ रात्रि को सरस्वती पद से विभूषित महाराज श्री का निगमागम सम्मत अमृतवाणी का प्रवाह होने लगा और यह पारलीपोस ग्राम अब वास्तव में गंगा (कोकिला नदी) यमुना (काली नदी) और सरस्वती (महाराज श्री की अमृत वाणी एवं सत्संङ्ग) के संगम से त्रिवेणी बन गया।

सेवा कार्य :

वाराणसी विश्वविद्यालय, राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं अन्य स्थलों के अनुभवी लब्ध प्रतिष्ठ वैद्यों की देख-रेख में बनवासी बन्धुओं की चिकित्सा

इस शिविर का प्रधान कार्य बना। इसके साथ-साथ ही वस्त्र वितरण एवं प्रसाद भोजन की सेवा का कार्य भी बराबर चल ही रहा है। महाराज श्री के शिष्यों ने भी सैकड़ों की संख्या में इस शिविर में सम्मिलित होकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साह वर्द्धन किया जिसमें कलकत्ता, चाईबासा, चक्रधरपुर एवं राँची के निवासियों का उत्साह विशेष उल्लेखनीय रहता आ रहा है। आनन्दपुर राज के राजवंश के घराने वालों के सहयोग के बिना शायद इस स्थान का चयन भी सम्भव न हो पाता। इस घराने का अद्यावधि उत्तरोत्तर उत्साहवर्द्धक सहयोग प्राप्त हो रहा है।

इस स्थान पर महाराज के द्वारा ४-५ वर्ष पर्णकुटियों में सेवा शिविर के बाद इस प्रयोजनों के स्थान पर निर्माण आनन्दपुर राज्य के सहयोग से सम्पन्न हुआ और साथ ही अब कुछ पक्के-कच्चे आवास स्थान भी बनाये गये। चाईबासा के बाबू सीताराम जी रूँगटा और कलकत्ते के श्री गोविन्द राम जी बांगड़, श्री शिव कुमार देवड़ा आदि के सहयोग से एक विशाल सभा भवन एवं शिव मन्दिर का निर्माण हुआ। बारहों मास नि:शुल्क औषध सेवा एवं पाठशाला के साथ-साथ संकीर्तन का कार्यक्रम भी चलने लगा। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध खाद्यान्न एवं घृत के व्यापारी मीमाणी परिवार ने वहाँ एक सुन्दर कुए का निर्माण कराया एवं कालान्तर में वैकुण्ठवासी चाँदरतन जी मीमाणी के पुत्रों द्वारा उनकी स्मृति में एक विशाल अतिथि शाला भी बनवा दी।

२६-७-७३ को पूज्य महाराजश्री द्वारा स्थापित आध्यात्मिक उत्थान मण्डल के न्यास का निर्माण हुआ जिसमें मण्डल के कार्यक्षेत्र को अधिक विस्तृत बनाने के लिये प्रयास जारी है।

स्वधर्मानयन :

आ० उ० मण्डल के सहयोग से अब तक प्राय: एक लाख पच्चीस हजार बनवासी क्रिस्तान पुन: स्वेच्छा से सनातन धर्म में प्रवेश पा चुके हैं। हजारों की संख्या में उनके भाई अपने पूर्वजों के सनातन धर्म में लौट आने के लिए उत्सुक हैं।

आयकर मुक्ति :

मण्डल को आयकर कानून के अन्तर्गत ८० (जी) धारा से आयकर की छूट मिली हुई है।

विश्व कल्याण आश्रम का संचालन :

पारलीपोस के विश्वकल्याण आश्रम में अभी ३ ब्रह्मचारी आश्रम के संचालनार्थ रह रहे हैं जहाँ पाठशाला, औषधालय एवं संकीर्तन के कार्य चालू हैं। इस समय सरकारी चिकित्सालयों सेवक निवृत्त महान अनुभवी चिकित्सक भी अपनी निःशुल्क सेवा प्रदान कर रहे हैं।

भावी योजनायें :

आश्रम के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिये अभी १॥ करोड़ रुपये की आवश्यकता है जिससे वहाँ के टूटे हुए आवास स्थानों का पुनः निर्माण, पपीते आदि की खेती एवं पाठशाला, औषधालय, संकीर्तन, देव मन्दिरों की पूजा तथा वनवासी भाईयों की सेवा-सुश्रुषा का कार्य समुचित ढंग से किया जा सके। इसके अतिरिक्त उस आश्रम में ४० कमरे ९ x १०' फुट के बनवाने अत्यन्त आवश्यक है जिससे सद्गृहस्थ वहाँ विशिष्ठ अथवा अन्य समय सम्मान पूर्वक निवास कर सके।

इसी प्रकार आश्रम में एक इण्डोर हास्पीटल का निर्माण भी हो चुका है जिसके सुचारु रूप से निर्माण और आधुनिक संसाधनों से सम्पन्न बनाने के लिये प्रायः एक करोड़ रुपयो की आवश्यकता है।

एक गोशाला का निर्माण आवश्यक है।

क्रिस्तान बने हुए, हजारों वनवासी अपने पूर्वजों के धर्म सनातन धर्म में जिसे 'सरणा धरम' कहते हैं पुनः लौट आने के लिये लालायित हैं। अतः उन्हें सम्मान पूर्वक स्वधर्मानयन के कार्य को पूरा करने के लिए उपर्युक्त सभी कार्य जरूरी हैं। गांव-गांव में एक-एक हनुमान जी का मन्दिर बनवाना है।

२५ वनवासियों को कुशल कार्यकर्त्ता बनाने का कार्य भी पूर्ण हो चुका है। परमेश्वर की परम कृपा से पूज्यपाद जगद्गुरुजी के सफल सान्निध्य में ये सब पुण्य कार्य सम्पादित होते जा रहे है। आप भी अपनी शक्ति अनुसार इस यज्ञ में सम्मिलित होकर अपने तन-मन-धन को सार्थक और जीवन को सफल बनावें।

श्री विश्व कल्याण आश्रम के दर्शनीय स्थल

काली कोकिला संगम, पोसेता, सिंहभूमि (बिहार)

१ काली (यमुना) और कोकिला (गंगा) का संगम। आपका आश्रम ठीक संगम के ऊपर ही है। इन दोनों नदियों की रेत और तले में सोना, चाँदी इत्यादि धातुएँ उपलब्ध हैं। जिनसे इनका पानी अत्यन्त स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्द्धक सिद्ध हुआ है।

२. **श्री विश्वरूप महादेव–** वर्षों से अपूज रहने के बाद भक्तों को अपने चमत्कारों से प्रभावित कर पुनः पूजन से अभिमत फल प्रदान करने वाले कृष्णमणि शिवलिंग।

३. **कमल सरोवर–** सदा कमल पुष्पों से भरा रहने वाला शिव मन्दिर के आगे में सुन्दर सरोवर।

४. **वायु वीर हनुमान–** कोकिल नदी से करीब एक हजार फुट की ऊँचाई पर अवस्थित स्वयं प्रादुर्भूत मारुतिनन्दन।

५. **झरने–** कोकिला नदी के किनारे जमीन से निकलते हुए झरने।

६. **पर्वत माला–** स्वर्गाश्रम की स्मृति दिलाने वाली नदी के दोनों किनारों पर अवस्थित मनमोहक पर्वत माला।

७. **संगम और पाट–** काली (यमुना) और कोकिला (गंगा) के संगम और दोनों नदियों का सुवर्ण रजतमयी बालू का युक्त तट।

८. बनवासियों का भाव विभोर गान नृत्य।

९. सत्संग भजन एवं एकान्तवास के आनन्द।

१०. **आश्रम में–** (क) तुलसी एव पुष्पवाटिका। (ख) नारियल, सुपारी, बड़, आम, काजू, पपीता, जामुन, हड़े, बहेड़ा, आँवला, बेल, नीम्बू आदि

सुन्दर-सुन्दर फल युक्त वृक्षावली। (ग) विद्युत आदि आधुनिक सुविधा सम्पन्न आवास स्थान। (घ) जल-कूप और नलकूप। (च) विशाल सभा भवन, अतिथि भवन। (छ) गौशाला। (ज) पाठशाला। (झ) औषधालय। (ञ) संगम पर स्थित विशाल बटवृक्ष। (ट) पारायण पर्णकुटी। (ठ) इष्ट देवी पावड़ी माता।

११. नन्दि पर्वत– ग्राम पारली पोसं और दलकी के मध्य स्थित पर्वत पर तीन विशाल गुफायें हैं जिनमें एक गुफा ११५ फुट लम्बी है।

१२. संगमेश्वर महादेव– काली कोकिला संगम के सान्निकट सत्संग बट के सामने भगवान् श्री संगमेश्वर महादेव का मन्दिर।

१३. भैरवनाथ महादेव– श्रीविश्वरूपेश्वर महादेव के सन्निकट ही अत्यन्त प्राचीन शिवलिंग जिसे भैरवनाथ महादेव कहा जाता है।

१४. झाडेश्वर महादेव– शिव मन्दिर के अन्दर एक विशाल वृक्ष पर मुंगाकार ब्रह्मपलाथलता से विंष्ठित झाडेश्वर महादेव।

१५. प्राचीन प्रतिमायें– भगवान् श्रीशेषनारायण के सहित विष्णु: भगवान् हिरण्यकशिपु को नखो से विदीर्ण करते हुए भगवान् नृसिंह की मूर्ति।

१६. जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरूपानन्दजी सरस्वती चिकित्सालय एवं अनुसन्धान केन्द्र करीव दो करोड़ की लागत से निर्मित मानव सेवार्थ इनडोर एवं आउटडोर अस्पताल।

१७. भगवती मां श्री राजराजेश्वरी त्रिपुर सुन्दरी मन्दिर आश्रम के मध्य भक्तों के दर्शनार्थ।





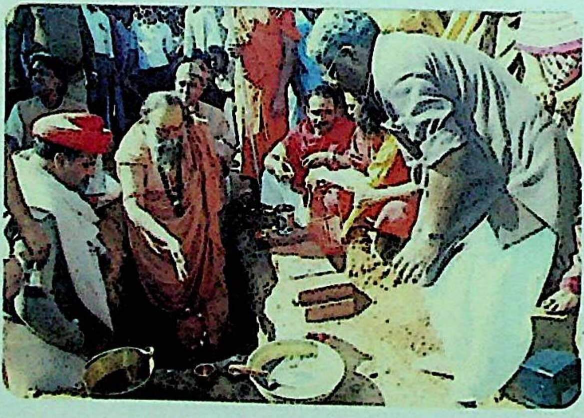
करीब एक हजार फुट पर्वत के उच्च शिखर पर श्री बसन्त कुमार मोहता (कलकत्ता) द्वारा निर्मित श्री वायुवीर भगवान जी के मन्दिर का दर्शनीय स्थल जहाँ १२ मार्च १९९५ को प्रतिष्ठा समारोह हुआ है ।



वनवासियों को भोजन परोसते हुए पूज्य महाराजश्री परम आनन्द की अनुभूति कर रहे हैं । साथ में श्री माधो दास जी मूंधड़ा एवं अन्य ।



प्रसिद्ध भजन सम्राट श्री अनूप जलौटा वनवासियों को भोजन परोसते हुए साथ में ब्रह्मचारी सुबुद्धानन्द जी अपने साथियों के साथ।



चिकित्सालय का शिलान्यास करते हुए पूज्य महाराजश्री के साथ में बिहार के तत्कालीन मंत्री श्री सिद्धेश्वर जी, श्री पचौरी, श्री घनश्याम कनोई तथा उत्साही कार्यकर्ता श्री केवलचन्द मिम्माणी।



हिन्दू समाज के धार्मिक इतिहास में प्रथम बार मुण्डारी भाषा में राम चरित मानस का अनुवाद, जिसका विमोचन पूज्य शंकराचार्यजी ने किया। साथ में स्वामी स्वरूपानन्दजी सरस्वती महाराज, देश, धर्म, सेवा संस्थान के श्री भगवती पोद्दार, सांसद पचौरी जी श्री अनूप जलौटा, श्री शिवशंकर बीदासरिया, स्व० सीताराम जी रुंगटा एवं ब्रह्मचारीगण।



करीब २ करोड़ की लागत से निर्मित 'जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी स्वरुपानन्दजी सरस्वती चिकित्सालय एवं अनुसन्धान केन्द्र' का विश्वकल्याण आश्रम में भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री द्वारा १९ जून १९९५ को उद्घाटन।

विश्वरुपेश्वर मन्दिर में नागलता जो वृक्ष होते हुए भी जागृत है



प्रस्तुति– ब्रह्मचारी सुबुद्धानन्द एवं जोशी निर्भीक